2019

B.A. (General)

2nd Semester CBCS Examination

HINDI

Paper - DSC 1B-T

Full Marks : 60 Time : 3 Hours

The figures in the margin indicate full marks.
Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable.

1. निम्नलिखित में से किन्हीं *दस* प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 10×2

(क) कबीर ने 'माया' से क्या तात्पर्य लिया है?

(ख) उद्धव कौन थे? वे ब्रज किस उद्देश्य से गये थे?

(ग) मीरा को जहर किसने और किस उद्देश्य से दिया था?

(घ) बिहारी द्वारा रचित एक नीतिपरक दोहा लिखिए।

(ङ) कबीर दास ने निन्दक को निकट रखने का सुझाव क्यों दिया है?

(च) 'साहित्य लहरी' और 'विनय पत्रिका' के रचनाकारों के नाम लिखिए।

(छ) चित्रकूट कहाँ है? वहाँ कौन सी नदी बहती है?

(ज) बिहारी का जन्म कहाँ हुआ था? उनके आश्रयदाता कौन थे?

(झ) 'कवितावली' के अतिरिक्त तुलसीदास की दो कृतियों के नाम लिखिए।

(ञ) 'रामचरितमानस' के प्रथम और अंतिम कांड का नाम लिखिए।

(ट) 'बीजक' को कितने भागों में विभक्त किया गया है? उनके नाम लिखिए।

(ठ) घनानंद किस राजा के दरबारी कवि थे? उनकी प्रेमिका का क्या नाम था?

(ड) भूषण की दो रचनाओं के नाम लिखिए।

(ढ) मीरा के गुरु का नाम लिखिए। मीरा की भक्ति किस कोटि की थी?

(ण) रसखान का जन्म कहाँ हुआ था? उनके आराध्य का नाम लिखिए।

2. निम्नलिखित में से किन्हीं *चार* प्रश्नों के यथानिर्देश उत्तर लिखिए : 4×5

(क) सतगुर सवाँन को सगा, सोधी सई न दाति।
हरिजी सवाँन को हितू, हरिजन सई न जाति॥
—उपर्युक्त पंक्तियाँ किस कवि की किस रचना से उद्धृत है? पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए।

(ख) अविगत गति कछु कहत न आवै।
ज्यों गूंगै मीठे फल को रस अन्तरगत ही भावै।
परम स्वाद सबही सु निरन्तर अमित तोष उपजावै।
मन बानी कों अगम अगोचर सो जानै जो पावै।
रूप रेखा गुन जाति जुगुति बिनु निरालम्ब कित धावै।
सब बिधि अगम बिचारहिं तातें सूर सगुन पद पावै।
—उपर्युक्त पद के रचनाकार का संबंध किस काव्यधारा से है? पद का भावार्थ लिखिए।

[Turn Over]

(ग) अति सूधो सनेह को मारग है जहाँ नेकु सयानप बांक नहीं।

तहाँ सांचे चलै तजि आपुनपौ झझकैं कपटी जे निसांक नहीं।

धनआनन्द प्यारे सुजान सुनौ इन एक तें दूसरो आंक नहीं।

तुम कौन धौं पाटी पढ़ी हो लला मन लेहु पै देहु छटांक नहीं।

—उपर्युक्त कविता किस ग्रंथ से उद्धृत है? इसके शिल्पगत सौंदर्य पर विचार कीजिए।

(घ) जोगिया से प्रीत कियाँ दुख होई।

प्रीत कियाँ सुख ना मोरी सजनी जोगी मित न कोई।

शत दिवस कल नाहि परत है तुम मिलियाँ बिनि मोई।

ऐसो सात या जग माँहि फेरि न देखी सोई।

मीरा रे प्रभु कबरे मिलोगे मिलिया आँणद होई।

—उपर्युक्त पंक्तियों की काव्य-भाषा क्या है? पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

(ङ) अबलौं नसानी अब न नसैहौं।
रामकृपा भवनिसा सिरानी जाग्यों फिर न डसैहौं॥
पायो नाम चारु चिंतामनि उर कर तें न खसैहौं।
स्याम रूप सुचि रुचिर कसौटी चित कंचनहि कसैहौं॥
परवस जानि हँस्यो हौं इंद्रिय निजवस है न हँसैहौं।
मन मधुपहि पनुकै तुलसी रघुपति पदकमल बसैहौं॥
—उपर्युक्त पद किस ग्रंथ से उद्धृत है? पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए।

(च) बाने फहराने घहराने घंटा जुजनि के
नाहीं ठहराने रावराने देस देस के।
नग भहराने ग्राम नगर पराने
सुमि बाजत निसाने सिवराज जु नरेश के।
हाथिन के हौदा उकसाने कुम्भ कुंजर के
पौन को भजाने अलि लटकेस के।
दल के दरारन ते कमठ करारे फूटे
कोश कैसे पात मेहराने फन सेस के।
—उपर्युक्त पद के रचनाकार का नाम बताते हुए इसमें निहित अर्थ को स्पष्ट कीजिए।

3. निम्नलिखित में से किन्हीं *दो* प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 2×10

(क) कबीर की सामाजिक चेतना पर प्रकाश डालिए।

(ख) सूरदास की भक्ति-भावना पर विचार कीजिए।

(ग) मीरा की विरह-वेदना पर विचार कीजिए।

(घ) पठित दोहों के आधार पर बिहारी की शृंगारिकता की समीक्षा कीजिए।